B.A. (Hons) Part III

Philosophy - Paper V

Topic - ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में प्रयोजनात्मक युक्ति

Dr. Sachidanand Prasad.

R.R.S. College, Mokama.

ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के क्रम में प्रयोजनात्मक युक्ति भी एक है जिसे अंग्रेजी में Teleological argument कहते हैं। Teleological ग्रीक शब्द 'Telos' से बना है जिसका अर्थ होता है - प्रयोजन। इसलिए 'प्रयोजन' पर आधारित तर्क को Teleological argument कहा जाता है। इस युक्ति में कहा गया है कि जब हमलोग विश्व की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि यहाँ एक व्यवस्था है। उदाहरण के लिए हमलोग यह देखते हैं कि प्रतिदिन ~~सूर्य~~ सूर्य पूरब की ओर से उगता है और ~~पश्चिम~~ पश्चिम की ओर डूबता है। इसी प्रकार चाँद रात में दिखाई देता है। फिर समय से ऋतु परिवर्तन होता रहता है। जाड़ा, गर्मी, वर्षा समय से आता है। अब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि जब संसार में व्यवस्था है तो ~~इस व्यवस्था~~ व्यवस्था का आधार कौन है? इसलिए विश्व में निहित प्रयोजन के आधार पर प्रयोजक के रूप में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक एक्वीनस का कहना है कि जब हमलोग इस विश्व की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि विश्व की अचेतन वस्तुएँ किसी न किसी रूप में प्रयोजन की पूर्ति में लगी हुई है। ऐसा लगता है कि संसार की अचेतन वस्तुओं का कोई नियामक है जो अचेतन वस्तुओं से लक्ष्य की पूर्ति कर रहा है। वह एक चेतन सत्ता है, जिसे ईश्वर कहा जाता है।

विलियम पेली ने घड़ी का उदाहरण देकर इस युक्ति के बारे मे बतलाया है/ उनका कहना है कि जिसप्रकार घड़ी के लिए किसी यन्त्रकार को मानना पड़ता है ठीक उसीप्रकार विश्व की जटिलता, विशालता तथा अभियोजन की व्याख्या के लिए किसी महान बुद्धिमान व्यक्ति को मानना पड़ता है/ उदाहरण के लिए जिसप्रकार आँख का निर्माण देखने के लिए हुआ है, उसीप्रकार विश्व का निर्माण प्रयोजन की पूर्ति के लिए हुआ है और वह ईश्वर है/ इसप्रकार ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित होता है/ इस युक्ति का समर्थन करते हुए मार्टिनो ने कहा है कि यदि हमलोग जीवों के अंग-प्रत्यंग पर ध्यान देते है तो उनके बीच अभियोजन क्षमता को देखकर आश्चर्य होता है/ प्रत्येक जीव के अंगो का चुनाव उनकी परिस्थिति के अनुसार किया गया है/ उदाहरण के लिए हिंसक जानवरों के तेज दाँत और तेज पंजे का निर्माण शिकार पकड़ने और उसको चीर-फाड़ के लिए हुआ है/ पक्षियों के डैने होते है ताकि वे उड़ सके/ इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि जीवों के बीच जो अभियोजन क्षमता है उसका कारण ईश्वर है जिन्होने इन जीवों की रचना उद्देश्य सिद्धि के लिए की है/

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि यह युक्ति ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए अधिक सरल एवं आकर्षक है। इस युक्ति में सरल शब्दों में कहा गया है कि इस संसार में जो व्यवस्था दिखाई पड़ता है उसका कारण मनुष्य नहीं हो सकता है क्योंकि मनुष्य एक ससीम और अपूर्ण जीव है इसलिए इस विश्व की व्यवस्था एवं प्रयोजन को देखकर एक कुशल बुद्धिमान सत्ता के अस्तित्व को मानना स्वभाविक है। वह सत्ता ईश्वर को छोड़कर कोई दूसरा नहीं हो सकता है।

आलोचना :- जर्मन दार्शनिक कान्ट ने इस युक्ति का खण्डन करते हुए कहा है कि इस युक्ति में सांसारिक वस्तुओं को देखकर प्रयोजनकर्ता के रूप में ईश्वर को स्वीकार करते हैं लेकिन इससे अधिक से अधिक यह सिद्ध होता है कि जगत में एक निश्चित उद्देश्य या प्रयोजन है जो किसी चेतन सत्ता से आया है। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि जगतकर्ता ईश्वर की सत्ता है। फिर कान्ट का यह भी कहना है कि इस युक्ति में ईश्वर को 'शिल्पकार' कहा गया है। परन्तु ईश्वर को 'शिल्पकार' कहना उसकी असीमता का खण्डन करता है क्योंकि ईश्वर पूर्ण शक्तिशाली और असीम सत्ता है। प्रो० केयर्ड ने इसे इस रूप में कहा है- "बाह्य शिल्पकार का विचार एक ऐसा विचार है जो

असीम एवं पूर्ण सत्ता के विचार को ठेस पहुँचाता है। अगर एक मानव शिल्पकार प्राकृतिक नियमों से ससीम होता है तो ईश्वर को भी एक बाह्य शिल्पकार कह उसे ससीम करना है।" अतः यह युक्ति ईश्वर को ससीम बना देती है। इस युक्ति की आलोचना करते हुए आलोचकों का कहना है कि यह युक्ति एक ऐसे ईश्वर की स्थापना करता है जो धार्मिक जीवन के लिए अनुपयुक्त है। इस युक्ति में ईश्वर को विश्वातीत माना गया है, जो विश्व से परे है। परन्तु हमारी धार्मिक भावना की संतुष्टि तभी हो सकती है जब ईश्वर मानव के समीप हो। आलोचकों का यह भी कहना है कि इस युक्ति में ईश्वर का मानवीयकरण किया गया है क्योंकि ईश्वर को मानव के रूप में मानना अनुचित है। ईश्वर एक पूर्ण और असीम सत्ता है। आलोचकों ने इस युक्ति की आलोचना करते हुए कहा है कि यह युक्ति विकासवाद का खण्डन करता है। विकासवाद के अनुसार यह विश्व विकास का परिणाम है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है परन्तु प्रयोजनात्मक युक्ति इसके विपरीत सम्पूर्णता में विश्वास करता है। आज का युग विज्ञान का युग है और विकासवाद की पुष्टि विज्ञान से हो चुकी है। अतः विकासवाद का खण्डन करने के कारण प्रयोजनात्मक युक्ति असंगत एवं तर्कहीन प्रतीत होता है।